RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

गीतिकाव्य परम्परा में राष्ट्रधर्म

मानस कुमार

शोधार्थी, संस्कृत विभाग, ल0ना0मि0विश्वविद्यालय, दरभंग–846004(बिहार)

वेद में कहा गया है –राष्ट्रावि वै विशः[1] अर्थात् जनता ही राष्ट्र है। राष्ट्र शब्द अंग्रेजी के नेशन (Nation) के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है। बर्गस ने अंग्रेजी शब्द नेचर (Nature) को राष्ट्रवाद का मूल माना है। उनके विचार में– ''मानव–मन की निसर्गतः ही समूह निर्माण में प्रवृत्त होता है और उसी का सहज विकास कालान्तर में राष्ट्र के रूप में प्रतिफलित हुआ है।''[2] डॉ0 सुधीन्द्र के शब्दों में– ''भूमि, भूमिवासी, जन और जन संस्कृति तीनों के सम्मिलन से राष्ट्र का स्वरूप बनता है। **'भूमि'** अर्थात् भौगोलिक एकता और जन संस्कृति अर्थात् सांस्कृतिक एकता तीनों के समन्वय का नाम राष्ट्र है। राष्ट्र में भौगोलिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक इकाइयाँ पूँजीभूत है।''[3] राष्ट्रीय चेतना का सम्बन्ध भावना से है, वह एक अमूर्त वस्तु है जो मानसिक तत्वों पर आधारित है। डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दों में– ''राष्ट्रीयता का अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र का अंश है और इस राष्ट्र की सेवा के लिए इसको धन–धान्य सम्पन्न बनाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को सब प्रकार के त्याग और कष्ट स्वीकार करने चाहिए।''[4]

लौकिक संस्कृत–साहित्य में 'गीतिकाव्य' के रूप में सर्वप्रथम उल्लेखनीय स्थान 'मेघदूत' का है। गीतिकाव्य वह काव्यप्रकार है जिसमें कवि अपने अन्तर« में स्थित कोमल भावों में से किसी एक को केन्द्र में रखकर कल्पना शक्ति के द्वारा उसे गेय बनाकर हृदय में स्थित भावों का अभिव्यक्ति करता है, ऐसी रचना निर्मित नहीं की जाती, बल्कि स्वतः स्फूर्ति होती है। कवि का हृदय सुख–दुःख या किसी धार्मिक–नैतिक भावना से उद्वेलित होकर सहसा काव्य के रूप में फूट पड़ता है। चिरकाल से उसकी सँजोई हुई कल्पना प्रवाहित होने लगती है तथा गेय छन्दों या रागों में मृदु शब्द निर्गत होने लगते हैं। इस संबंध में आचार्य पं. बलदेव उपाध्याय का कहना है कि–

"गीतिकाव्य संस्कृत–भारती का परम रमणीय अंग है। गीतियों का निर्माण उस बिन्दु पर होता है, जब कवि का हृदय सुख–दुःख के तीव्र अनुभव से आप्लावित हो जाता है और वह अपनी रागात्मिका अनुभूति को अपनी हार्दिक भावना की पूर्णता के कारण बाह्य अभिव्यक्ति के रूप में परिणत करता है। स्वगम्य अनुभूति को परगम्य अनुभूति के रूप में परिणत करने के लिये कवि जिन मधुर भावापन्न रस सान्द्र उक्तियों का माध्यम पकड़ता है, वहीं होती हैं गीतियाँ।"[5]

कविवर राजेन्द्र मिश्र रचित वाग्वधूरी में 'गीतिकाव्य' का यह लक्षण दिया गया है–

"भावानामात्मनिष्ठानां कल्पनावलितं लघु।
स्फुरणं गेयरूपेण गीतिकाव्यं निगद्यते।।"[6]

कुछ विद्वानों ने 'गीतिकाव्य' को संस्कृत काव्यशास्त्र में निरुपित 'खण्डकाव्य' से अभिन्न माना है। महाकाव्य के कथानक के एक खण्ड पर आश्रित रचना ही खण्डकाव्य है अनिवार्य रूप से यह काव्य प्रबन्धात्मक होता है, शास्त्रीय दृष्टि से यह छोटा काव्य अर्थात् 8 सर्ग से कम का होता है वर्णन की इसमें प्रधानता रहती है। आधुनिक समीक्षा की दृष्टि से खण्डकाव्य और गीतिकाव्य में भेद होता है। खण्डकाव्य वस्तुवर्णनपरक अर्थात् बहिर्रें का प्रतिपादक होता है जबकि गीतिकाव्य आत्माभिव्यक्ति–प्रधान होता है। गीतिकाव्य प्रबन्धात्मक के अतिरिक्त मुक्तक भी होता है जिसमें प्रत्येक पद्य स्वच्छन्द भावोच्छ्वास से पूर्ण रहता है।

महाकवि कालिदास द्वारा रचित **'मेघदूत'** भारत की अखण्डता का परिचायक ग्रंथ है। कवि ने रामगिरि पर्वत से लेकर अलकापुरी तक के अखण्ड भारत की कल्पना की है। कवि ने मालवा के पठार, मालवा के पूर्व से चम्बल तक का राज्य–अवन्ति प्रदेश, उज्जयिनी नगरी देवगिरि (झांसी के दक्षिण में स्थित), दशपुर (वर्तमान मन्दसौर) कुरुक्षैत्र, (हरियाणा प्रदेश का प्रमुख धार्मिक नगर तथा विद्वानों का गढ़), ब्रह्मावर्त जो सरस्वती और दृषद्वती नामक नदियों के मध्य तथा हिमालय और विन्ध्याचल का मध्य भाग ब्रह्मावर्त कहलाता है वर्तमान पटियाला, अम्बाला, करनाल, पानीपत, हिसार, सहारनपुर, मेरठ, कानपुर, प्रयाग आदि क्षेत्र आते हैं, कनखल, क्रौंचरन्ध्र पर्वत, कैलाश पर्वत (जो वर्तमान में चीन अधिकृत तिब्बत में है), मानसरोवर (जो चीन अधिकृत तिब्बत में है) तथा अलकापुरी तक के अविभाजित अखण्ड व राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत भारत की मनोरम झाँकी प्रस्तुत की है।

अर्वाचीन कवियों ने भी इसी अखण्डित राष्ट्रीयता की परम्परा का अनुसरण किया है। डॉ. राजेन्द्र मिश्र जी तथा डॉ. हर्षदेव माधव ने भी पृथ्वी के इसी स्वरूप की कल्पना की है। डॉ. माधव ने पार्थिवी व यक्ष के विश्वभ्रमण की उत्कण्ठा के माध्यम से भारत के दिव्य स्थानों आम्रकूट पर्वत, दशार्णदेश, विदिशानगरी, उज्जयिनी, देवगिरि, दशपुर, कुरुक्षेत्र, हिमालय,

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पवित्रनदियों आदि के वर्णन से भारत की राष्ट्रीय भावना से प्रेरित अखण्डता की कल्पना की है। जो भारत की एकता का संदेश देती है।

महाकवि कालिदास ने मेघदूत में सम्पूर्ण पृथ्वी को एक कुटुम्ब के समान माना है। भिन्न–भिन्न प्रदेशों तथा भिन्न–भिन्न मतों (शैव, शाक्त, वैष्णवों) में विभक्त होने पर भी सम्पूर्ण पृथ्वी एक कुटुम्ब के समान सुशोभित थी। इसीलिये यक्ष मेघ को इस पृथ्वी के सम्पूर्ण सौन्दर्य का पान करने को कहता है।

अर्वाचीन कवि डॉ. माधव ने भी भारतीय संस्कृति के इसी मूलमंत्र का अनुसरण करते हुये डायरी की रचना की है। इस पावन स्वरूपा पृथ्वी पर शाप, दण्ड, ऊँच–नीच आदि का भेदभाव नहीं है, इस पृथ्वी पर अलकापुरी से निष्कासित यक्ष, पापरुचि नामक पिशाच, वसुसेन पाताललोक का नागराज, मनुष्य स्वरूपा पार्थिवी आदि यक्ष, गन्धर्व पिशाच सभी सुख व आनन्दपूर्वक निवास करते हैं जहाँ देवत्व का नाश होने पर भी तेज की अनुभूति होती है।

साहित्य का उद्देश्य लोकमंगल की कामना होती है महाकवि कालिदास के 'मेघदूत' का उद्देश्य भी भारतीय संस्कृति और धर्म, तप, त्याग आदि का उत्तमोत्तम चित्रण प्रस्तुत करता है। कालिदास द्वारा प्रयुक्त छोटी–छोटी किन्तु अर्थ गाम्भीर्य से युक्त सूक्तियाँ स्वाभिमान की महत्ता, सहनशीलता, शरणागतवत्सलता, मित्रता, कर्त्तव्यपरायणता, उदारता आदि सद्वृत्तियों को प्रकाशित करती है जो मानव कल्याणपरक राष्ट्र है। मेघदूत के अंतिमश्लोक में महाकवि कहते हैं कि–

"इत्थंभूतं सुरचितपदं मेघदूताभिधानं
कामक्रीडाविरहितजनेविप्रयोगेविनोदः।"[7]

अर्थात् यह काव्य वियोगकाल में रतिसुख से वंचितजनों के लिये मन बहलाव का साधन है।

वहीं डॉ. इच्छाराम द्विवेदी जी के **'दूतप्रतिवचनम्'** का उद्देश्य लोक कल्याणार्थ भारत की वास्तविक स्थिति का चित्रण करना है। इसी प्रकार डॉ. हर्षदेव माधव के **'मूकोरामगिरिभूत्वा'** का उद्देश्य भी लोकमंगलार्थ सामाजिक मान्यताओं, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचारों तथा स्वाभाविक मानवीय चेष्टाओं एवं उनके आचार–विचारों को प्रकाशित करना है। डॉ. माधव ने **चतुर्थखण्ड सुवर्णमेघ** में उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसमें पिछड़े गाँव के अत्यन्त निर्धन लोग जो न्यग्रोध (वट), पीपल व इमली के पत्तों को पका रहे थे, ऐसे लोगों के लिए यक्ष स्वर्ण देने वाले भैरव मन्त्र के साथ श्रीसूक्त का पाठ कर धन की देवी से पृथ्वी पर आकर समस्त गाँव में स्वर्ण वर्षा करवाता है तथा लोक मंगल की कामना करता है।

महाकवि कालिदास का मेघदूत मानवीय संवेदना का जीवंत काव्य है जिसमें चेतन–अचेतन सभी चेतनवत् ही कार्य करते हैं अचेतन मेघ के द्वारा यक्ष का अपनी हृदयस्वामिनी यक्षिणी को संदेश भेजना ही कल्याणकारी राष्ट्र में मानवीय संवेदना का प्रबल उदाहरण है। मेघदूत में कालिदास ने प्रकृति को सर्वत्रमानवोचित सुख–दुःख के भावों से सम्पन्न माना है। मेघ से पर्वत का मिलन बहुत दिनों में होने पर समागम के समय पर्वत उष्ण अश्रुजल छोड़कर अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करता है–

काले काले भवति भवतो यस्य संयोगमेत्य।
स्नेहव्यक्तिश्चिरविरहजं मु×चतोवाष्पमुष्णम्।।

इसी प्रकार डॉ. हर्षदेव माधव के 'मूकोरामगिरिर्भूत्वा' में मानवीयता का जीता–जागता उदाहरण कवि द्वारा मनुष्यरूप पार्थिवी की कल्पना करना है और उसी पार्थिवी के माध्यम से स्वर्ण नगरी अलका में रहने वाले यक्ष की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होना है, पार्थिवी ही यक्ष की दिव्यता का कारण बनी। माधवजी की मानवीय संवेदनाओं ने यक्षेश्वर कुबेर के हृदय में भी भावनाओं का संचार कर दिया जिससे कुबेर यक्ष को पार्थिवी सहित अलका में ससम्मान प्रवेश की अनुमति देते हैं। निष्कर्षतः कालिदास कालीन मेघदूत तथा अर्वाचीन कवियों की रचनाओं में समयाभेद होने के बाद भी कथावस्तु, **राष्ट्रीय एकता, अखण्डता, मानवीय भावना, लोककल्याण** आदि अर्थों में साम्यता प्राप्त होती है जो बेजोड़ है।

संदर्भ सूचीः–

1. ऐतरेय ब्राह्मण–8/26
2. Borgese, G. Ant, Encyclopedia of the Social Science, P. 32
3. डॉ0 सुधीन्द्र, हिन्दी कविता में युगान्तर, पृ0 164
4. डॉ0 हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास, पृ0 257
5. मेघदूत–डॉ. बाबूराम त्रिपाठी परिशिष्ट–श्लोक नं.–5
6. मूकोरामगिरिर्भूत्वा–डॉ. हर्षदेव माधव, पृ.–95
7. मेघदूत–डॉ. बाबूराम त्रिपाठी, पूर्वमेघ–12

RRIJM 2015, All Rights Reserved